SHODH SAGAR®
Universal Research Reports
ISSN: 2348-5612 | Vol. 10 | Issue 4 | Oct - Dec 2023 | Peer Reviewed & Refereed

ऋग्वेद में वर्णित विविध चिकित्सा

शिवपाल (सहायक आचार्य)
संस्कृत विभाग, जनता वैदिक कॉलेज, बड़ौत (बाग़पत), उत्तर प्रदेश, 250611
ईमेल० - shivpalvarahi8090@gmail.com

श्रुति (शोधछात्रा)
संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 110007
ईमेल ० -aryashruti579@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.36676/urr.v10.i4.1533
Published: 30/12/2023

* Corresponding author

संक्षेपिका - वर्तमान समय में आधुनिक चिकित्सा पद्धति अपने सर्वोत्तम युग में है परन्तु उसकी जड़ें प्राचीन चिकित्सा पद्धति से होकर ही यहाँ तक पहुँची हैं, जिनमें वेदों का विशेष योगदान रहा है, प्रमुख रूप से ऋग्वेद का विशेष स्थान है। ऋग्वेद में अनेक प्रकार की चिकित्सा का वर्णन मिलता है। जैसे जल चिकित्सा, सूर्य चिकित्सा, वायु चिकित्सा, अग्नि चिकित्सा, मानस चिकित्सा, त्वक् चिकित्सा आदि। जल चिकित्सा में जल द्वारा चिकित्सा की गयी है, ऋग्वेद में जल को औषधि कहा गया है। जल रोगों को दूर करने वाला तथा सभी प्राणियों का जीवन बताया गया है। सौर चिकित्सा में सूर्य की किरणों द्वारा की जाने वाली चिकित्सा को बताया गया। वायु चिकित्सा में वायु द्वारा की जाने वाली चिकित्सा का उल्लेख है और वायु को ही मनुष्यों का प्राण बताया गया। वायु में अमृत का खजाना है। ऋग्वेद में विषैले कीटाणुओं और उनके उन्मूलन की अनेक विधि प्राप्त होती है। अलग-अलग रोगों को हटाने तथा सूर्य की किरणों द्वारा हृदय संबंधी बीमारियों को ठीक करने का उल्लेख प्राप्त होता है। ऋग्वेद में पानी और जड़ी-बूटियों को दवा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार अनेक चिकित्सा संबंधी उल्लेख ऋग्वेद में प्राप्त होते हैं अत: इस शोधपत्र के द्वारा ऋग्वेद में वर्णित विभिन्न चिकित्सा-पद्धति के विषय में अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य बिन्दु - वेद, ऋग्वेद, चिकित्सा पद्धति, औषधि, रोग, जल, वायु, अग्नि, मानस, सूर्य चिकित्सा, प्राणायाम, अवसाद, उपचार आदि ।

© 2023 Published by Shodh Sagar. This is a Gold Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

SHODH SAGAR®
Universal Research Reports
ISSN: 2348-5612 | Vol. 10 | Issue 4 | Oct - Dec 2023 | Peer Reviewed & Refereed

वैदिक साहित्य में सबसे प्राचीन ग्रंथ 'ऋग्वेद' को माना जाता है। वैदिक काल में रोग एवं उनकी चिकित्सा की खोज हो चुकी थी। जिनका प्रयोग अनेक प्रकार से किया जाता था। ऋग्वेद में प्रत्येक सूक्त का कोई न कोई देवता है। अग्नि, इन्द्र, अप, रूद्र आदि के साथ अश्विनी कुमार भी देवता कहे गये है। ऋग्वेद में आधिदैविक दृष्टिकोण से विभिन्न देवताओं की प्रार्थना रोग निवारण के लिए की गई है। वैदिक साहित्य में सामान्य रूप से कई ऐसी चीजों का उल्लेख है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्राचीन भारतीय चिकित्सा परंपरा का गठन करती हैं। ऋग्वेद में अनेक प्रकार की चिकित्सा का वर्णन मिलता है। जैसे जल चिकित्सा, सूर्य चिकित्सा, वायु चिकित्सा, अग्नि चिकित्सा, मानस चिकित्सा त्वक् चिकित्सा आदि। जल चिकित्सा में जल द्वारा चिकित्सा की गयी है, जल को औषधि कहा गया है। जल रोगों को दूर करने वाला तथा सभी प्राणियों का जीवन बताया गया है। सौर चिकित्सा में सूर्य की किरणों द्वारा की जाने वाली चिकित्सा को बताया गया। वायु चिकित्सा में वायु द्वारा की जाने वाली चिकित्सा तथा वायु को ही मनुष्यों का प्राण बताया गया। वायु में अमृत का खजाना है। ऋग्वेद में विषैले कीटाणुओं और उनके उन्मूलन की विधि प्राप्त होती है। अलग-अलग रोगों को हटाने तथा सूर्य की किरणों द्वारा हृदय संबंधी बीमारियों को ठीक करने का उल्लेख है। पानी और जड़ी-बूटियों को दवा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यक्ष्मा, अज्ञात यक्ष्मा, राजयक्ष्मा , ग्राही , हरिमा, हृदयरोग आदि जैसे रोगों का उल्लेख किया गया है। बीमारी को ठीक करने के लिए कुछ वैदिक देवताओं का आह्वान किया जाता है, जैसे बूढ़े च्यवन को युवा बनाना। यक्ष्मा, तपेदिक आदि रोगों को ठीक करने योग्य रोगों के लिए सूक्त 161 को संदर्भित किया गया है। इसमें उल्लेख प्राप्त होता है कि जीवन काल को सामान्य तरीके से किसी भी सीमा तक बढ़ाया जा सकता है।[1] इसे कायाकल्प या पुनर्यौवन कहा जाता है। गर्भाशय और योनि संबंधी बीमारी के मामले में भ्रूण और गर्भाशय के रोगों के इलाज का उल्लेख प्राप्त होता है।[2] ऋग्वेद के सूक्त संख्या 163 में शरीर के विभिन्न अंगों और उनसे संबंधित बीमारियों की गणना के बारे में बताता है।[3] इसी सूक्त में मनुष्य के शारीरिक विभाजन

[1] ऋग्वेद -10/161/1-6; निमय चंद्र पाल (सं.), ऋग्वेद संहिता, अनुवाद रमेश चंद्र दत्ता, स्वदेश प्रकाशन, 2007; पृ.1352-1353.

[2] ऋग्वेद - 10/162/1-4; वही, पृ.1353.

[3] ऋग्वेद - 10/163/1-6; वही, पृ.1354

© 2023 Published by Shodh Sagar. This is a Gold Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

ISSN: 2348-5612 | Vol. 10 | Issue 4 | Oct - Dec 2023 | Peer Reviewed & Refereed

पर भी चर्चा की गई है। जो रोग या जीवाणु संबंधी विकृतियों से प्रभावित होता है। सूक्त 164 में मन की तर्कसंगत कार्यप्रणाली को प्रभावित करके मनोवैज्ञानिक रोगों के इलाज का उल्लेख किया गया है। इस प्रकार ऋग्वेद में अनेक चिकित्सा पद्धति का उल्लेख प्राप्त होता है, जिनमें प्रमुख चिकित्सा पद्धति निम्न प्रकार है।

शल्य चिकित्सा -

ऋग्वेद में शल्य चिकित्सा का विस्तृत उल्लेख प्राप्त होता है। अश्विनौ अर्थात् अश्विन कुमार को मुख्य रूप से काय-चिकित्सा और शल्य-चिकित्सा का देवता माना गया है । शल्य चिकित्सा और काय-चिकित्सा के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियाँ विविध और व्यापक हैं। उन्होंने अमोघ रसायन नामक औषधि से जीर्ण-शीर्ण च्यवन को नौजवान बना दिया।[4] उन्होंने दीर्घतमस की आयु बढ़ाई, यद्यपि वे वृद्ध था और दासों द्वारा उनका सिर काट दिया गया था। उन्होंने घोड़ी विश्पला को लोहे का पैर लगाया[5], जो दौड़ में लंगड़ी हो गई थी। उन्होंने अत्रि और अन्य लोगों के कटे हुए अंग जोड़े। उन्होंने श्यावाश्व को पुनर्जीवित किया, जिसके शत्रुओं ने अंग-भंग कर दिए थे। उन्होंने कटे हुए दधीचि के सिर पर घोड़े का सिर जोड़ा। उन्होंने ऋज्राश्व को दृष्टि प्रदान की तथा कण्व को श्रवण शक्ति प्रदान की। उनके कारण ही परवृज और श्रोण पुनः चलने में समर्थ हुए। उन्होंने वद्रिमती के नपुंसक पति को प्रबल पुरुषत्व प्रदान किया तथा घोषा और श्रोण को स्वस्थ किया ।

सूर्य चिकित्सा -

सूर्य-किरणों द्वारा किए जाने वाले चिकित्सा को सूर्य-चिकित्सा कहा गया है। सूर्य चिकित्सा के माध्यम से कृमि (जिनके लिये आयुर्वेद में 'रक्ष या राक्षस्' 'निशाचर' और 'यातुधान' शब्द प्राप्त होते हैं) को सूर्य किरणों के द्वारा नष्ट किया जाता है। उदित होता सूर्य कृमियों को मारता है। मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष, वनस्पति, औषधि, तृण आदि सबका जीवन सूर्य के प्रकाश पर ही निर्भर

[4] ऋग्वेद – 1/116/10

[5] ऋग्वेद – 1/116/15

© 2023 Published by Shodh Sagar. This is a Gold Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

ISSN: 2348-5612 | Vol. 10 | Issue 4 | Oct - Dec 2023 | Peer Reviewed & Refereed

है। **सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुष्श्च**[6] सूर्य चराचर विश्व की आत्मा है। सूर्य आयु को बढ़ाता है। सूर्य बीमारी और सभी प्रकार के दुःस्वपन का नाश करता है।[7] सूर्य को हृदयरोग का चिकित्सक कहा गया है। यथा -

उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम् ।
हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय ॥
उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम् ।
हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय ॥[8]

हे सूर्य, आप आज दयालु प्रकाश से चमकते हुए, मेरे हृदय की बीमारी और (मेरे शरीर का) पीलापन दूर करें। सूर्य चिकित्सा के माध्यम से 'पीलिया' को ठीक करने का उपाय बताया गया है, जो सौर-चिकित्सा से विनष्ट हो जाता है। वर्तमान समय में भी पीलिया के रोगी के लिए 'सूर्य की किरणें' लाभप्रद कही जाती हैं। इस प्रकार विविध कृमियों और रोगों को सूर्य विनष्ट करता है। ऋग्वैदिक काल के आर्य सौर-चिकित्सा में विश्वास रखते थे। **अपामीवामप स्रिधमप सेधत दुर्मतिम् । आदित्यासो युयोतना नो अंहसः ॥**[9] अर्थात् सूर्य रोगों को शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार के रोगों को दूर करता हुआ बुद्धि की शुद्धि करता है और ज्ञान में भी वृद्धि करता है।

वायु चिकित्सा -

वायु चिकित्सा के द्वारा भी शरीर से रोगों की निवृत्ति संभव है। ऋग्वेद में वायु को गुणकारी औषधि के समान कहा है। उनसे आयु को बढ़ाने की कामना की गई है यथा- "**वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे । प्र ण आयूंषि तारिषत्॥**"[10] अर्थात् वायु हमारे लिए शुद्ध औषध प्राप्त कराए तथा हमारे लिए शांति देने वाली हो और कल्याणकारी हो, यह वायु हमारे हृदय को स्वस्थ रखे।

[6] ऋग्वेद – 1/115/1
[7] ऋग्वेद – 10/37/4
[8] ऋग्वेद – 1/50/11
[9] ऋग्वेद – 8/18/10
[10] ऋग्वेद – 10/186/1

© 2023 Published by Shodh Sagar. This is a Gold Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

ISSN: 2348-5612 | Vol. 10 | Issue 4 | Oct - Dec 2023 | Peer Reviewed & Refereed

वायु मनुष्य के हृदय के लिए शान्तिदायक है, रोग का शमन करने वाला तथा कल्याण कारक औषधि है, ठीक रीति से वायु का सेवन करने पर वह आयु को बढ़ाता है, ऋग्वेद में प्राण और अपान दोनों प्रकार के वायु का निर्देश किया गया है। प्राण से शरीर में बल भेजने और अपान से शरीर के पाप-रोगों को बाहर निकालने के लिये कहा गया है- **आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद्रपः । त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयसे ॥**[11] - अर्थात् हे वायु तुम औषधि गुणों को यहाँ मेरे पास ले आओ। मुझमें जो दोष है उसे तुम मुझसे दूर ले जाओ। तुम सभी प्रकार के औषधियों के स्वरूप हो और तुम ही देवों के दूत बनकर इस विश्व में घूम रहे हो। यज्ञ सामग्री में नाना प्रकार की औषधियाँ होती हैं। अग्नि उनके अणु बनाकर वायु को देता है। वायु उसे चारों ओर फैलाता है और आरोग्य उत्पन्न करता है। केवल औषधियों की सुगन्ध मात्र से मनुष्य का पित्त बढ़ता है।

मानसिक चिकित्सा -

ऋग्वेद में उपलब्ध विविध चिकित्सा पद्धतियों में मानसिक चिकित्सा पद्धति का भी उल्लेख प्राप्त होता है। रोग के दो ही अधिष्ठान हैं- मन और शरीर। शरीर में रोग होने से पूर्व मन रुग्ण होता है, कई बार शरीर स्वस्थ दिखता है, परन्तु मन ही अस्वस्थ रहता है। उन्माद, अवसाद रोगों का सम्बन्ध मन तथा बुद्धि से ही है इसलिए मन को ही मुक्ति तथा बन्धन का कारण माना गया है, मन प्राणियों में अमृत रूप है। मन के बिना कोई कर्म नहीं किया जाता, मन को वश में करने का साधन प्राणायाम है और इन्द्रियों को वश में रखने वाला मन है. मन के बल से बहुत से रोग नष्ट होते हैं। अत्रि ऋषि ने मानसिक चिकित्सा को बहुत महत्वपूर्ण कहा है। अत्रि ऋषि मानसिक चिकित्सा सम्बंधी विचार प्रकट करते हुए कहते हैं- "**आ त्वागमं शंतातिभिरथो अरिष्टतातिभिः । दक्षं ते भद्रमाभार्षं परा यक्ष्मं सुवामि ते ॥**[12] अर्थात् (हे रोगी) तेरे पास सुख करने वाले और आरोग्य बढ़ाने वाले बलों के साथ मैं आया हूँ। तेरे अन्दर कल्याण करने वाले और आरोग्य बढ़ाने वाले बलों के साथ मैं आया हूँ। जो तुम्हारे अंदर रोग था, वह दूर कर दिया है। यह

[11] ऋग्वेद – 10/137/3

[12] ऋग्वेद – 10/137/4

© 2023 Published by Shodh Sagar. This is a Gold Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

मानसिक चिकित्सा है। इससे अन्दर ही अन्दर मन की शक्ति से रोग दूर होते हैं। ऋग्वेद कहता है कि मन ही रोग का कारण है और मन ही उसका उपचार है। नैतिक विकास की प्रवृत्ति है - मरते हुए साथी को बचाना और उसे पूर्ण संरक्षण देना है।[13] मनोवैज्ञानिक चिकित्सा में मनोबल विकसित करने के लिए अतिरिक्त आश्वासन चिकित्सा और दृढ़ संकल्प चिकित्सा भी शामिल है। अष्टांग हृदय में वाग्भट्ट कहते हैं कि ईर्ष्या से मुक्त दयालु मन सभी प्रकार के ज्वर को नष्ट कर देता है।

जल चिकित्सा -

ऋग्वेद में जल भी को चिकित्सा के रूप में वर्णित किया गया है। जल देवता माना गया है तथा जल से आरोग्य की कामना की गई है। जल में सम्पूर्ण औषधियाँ प्राप्त होती हैं, वह ही सभी औषधियाँ को देने वाला है। **अ॒प्सु मे॒ सोमो॑ अब्रवीदु॒न्तर्विश्वा॑नि भेष॒जा। अ॒ग्निं च॑ वि॒श्वश॑म्भुव॒मापं॑श्च वि॒श्वभे॑षजीः॥**[14] जल औषधि-रूप है, यह सभी रोगों को दूर करने वाली औषधि के समान गुणकारी है, यह जल ही समस्त रोगों की दवा है, जल हमारे लिए औषध प्राप्त कराये, ऐसा उल्लेख मंत्र में इस प्रकार प्राप्त होता है। यथा- "**आप॒ इद्वा उ॑ भेष॒जीरापो॑ अमीव॒चात॑नीः । आप॒: सर्व॑स्य भेष॒जीस्तास्ते॑ कृण्वन्तु भेष॒जम् ॥**[15] अर्थात् जल ही सब रोगों की औषधि है। ऋग्वेद में कहा गया है **अप्सु मे सोमो अब्रविदन्तर्विस्वनि भेषज**[16] अर्थात् जल में सभी औषधीय गुण विद्यमान हैं। जल से सभी रोगों का उपचार संभव है। एक अन्य मंत्र में कहा गया है कि जल अमृत के समान है। जल में सभी औषधियों के गुण विद्यमान हैं। जल शरीर को शक्ति प्रदान करता है और रोगों का नाश करता है। सोम आदि मिश्रित जल पीने से लोग दीर्घायु होते हैं। जल हृदय रोग को ठीक करता है। अनेक मंत्रों में जल के विभिन्न गुणों का वर्णन किया गया है। हिमालय से निकलने वाली सभी नदियों का जल विशेष लाभकारी है तथा बहता हुआ जल शुद्ध और गुणकारी होता है। जल लोगों को शक्ति प्रदान करता है और गति प्रदान करता है। जल ही जीवन का आधार है।

[13] ऋग्वेद – 10/60/10 "यमादहं वैवस्वतत् सुबन्धोरमना अभारम्। जीवत्वे न मृत्यवे , अथो अरिष्टताये॥

[14] ऋग्वेद – 01/23/20

[15] ऋग्वेद – 10/137/6

[16] ऋग्वेद – 10/09/06 केएल. जोशी (सं.), ऋग्वेद संहिता - खंड। आईआईवी, दिल्ली, परिमल प्रकाशन, 2016, पृ. 209.

© 2023 Published by Shodh Sagar. This is a Gold Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

अग्नि चिकित्सा -

ऋग्वेद में अग्नि चिकित्सा के माध्यम से गर्भाशय और योनि के रोगों को दूर करने के लिये अग्नि को चिकित्सक बताया गया है। अग्नि राक्षसों का संहार करने वाले है। अग्नि के विषय में उल्लेख है कि, वे सब उपद्रवों को शान्त करें और जिन उपद्रवों से स्त्री रोगिणी बनी है। उन सबको अग्निदेव दूर कर दें।[17] जो रोग नारी के गर्भ को नष्ट करना चाहता है, उसे अग्निदेव शरीर से दूर भगाते हैं।[18] ऋग्वेद में कहा गया है कि - जिन पिशाच, राक्षसों और रोग व्याधियों ने देह को आक्रान्त किया है, उन सबको अग्निदेव विनष्ट कर दें।[19] अग्नि सर्दी की औषधि है । दूसरे शब्दों में, सर्दी और सर्दी से होने वाले रोगों में अग्नि लाभदायक है। अग्नि द्वारा विष उपचार और कृमि उपचार जैसी सभी बीमारियों को ठीक किया जाता है। अग्नि के स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा गया है कि तैंतीस देवताओं के सभी विशेषण अग्नि में हैं। भाव यह है कि ऊर्जा की सभी धाराएँ अग्नि में हैं। ऋग्वेद में कहा गया है कि - **सर्वांग सर्वं ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेविदम्**[20] जो लोग यज्ञ नहीं करते वे सभी रोगी हो जाते हैं। अग्नि की शिखाएँ मनुष्यों को स्वस्थ करती हैं और उनका कल्याण करती हैं।

स्पर्श चिकित्सा -

ऋग्वेद और अथर्ववेद में हाथ से छूकर रोग ठीक किया जाता था। **क्व से ते रुद्र मृलयकुरहस्तो यो अस्ति भेषजो जलशः**[21] रोकथाम की यह विधि अब मेस्मेरिज्म और हिप्नोटिज्म की तुलना में जानी जाती है। ऋग्वेद में स्पष्ट वर्णन है कि - **अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः । अयं मे विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः ॥**[22] - "यह मेरा हाथ सौभाग्यशाली है, लेकिन उसका यह स्पर्श उससे भी अधिक सौभाग्यशाली है। इस हाथ में सभी उपचारक औषधियाँ हैं, और यह कोमल स्पर्श से

[17] ऋग्वेद – 10/162/1

[18] ऋग्वेद – 10/162/3

[19] ऋग्वेद – 10/162/2

[20] ऋग्वेद – 10/161/5 आचार्य वेदांत तीर्थ (सं.), ऋग्वेद-खंड। 4, दिल्ली, मनोज प्रकाशन, 2012, पृ. 548.

[21] ऋग्वेद – 02/37/04 आचार्य वेदांत तीर्थ (सं.), ऋग्वेद-खंड। 1, दिल्ली, मनोज प्रकाशन, 2012, पृ. 455.

[22] ऋग्वेद – 10/60/12

© 2023 Published by Shodh Sagar. This is a Gold Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

सब कुछ ठीक कर देता है। ऋग्वेद और अथर्ववेद के अनुसार हस्त स्पर्श से उपचार का नियम बताये गये हैं। शरीर में दो वायु हैं प्राण और अपान। प्राण वायु शरीर को ऊर्जा देती है और अपान वायु शरीर के दोषों को बाहर निकालती है। इन दोनों वायु से सभी प्रकार के रोगों का उपचार होता है। किसी रोगी का रोग ठीक करने के लिए उपचार करते समय अपने हाथ फैलाएं, अंगुलियों को खोलें और अपने हाथों में उपचार शक्ति को महसूस करें, जब आप दोनों हाथों से स्पर्श करें तो कहें, मेरे दोनों हाथ स्पर्श करने में सुखदायक और सुखद हों और आपके सभी रोग दूर हो जाएं, आपके अंदर ऊर्जा आ रही है और रोग दूर हो रहे हैं।[23] इस तरह अंगुलियों से रोगी के शरीर को स्पर्श किया जाता है और हाथ को घुमाया जाता है। इस नियम से मरने वाला व्यक्ति भी जीवित हो सकता है।

निष्कर्ष -

इस प्रकार ऋग्वेद में अनेक प्रकार की चिकित्सा का वर्णन मिलता है। जिसमें जल चिकित्सा, सूर्य चिकित्सा, वायु चिकित्सा, अग्नि चिकित्सा, मानस चिकित्सा आदि प्रमुख है। जल चिकित्सा में जल के द्वारा चिकित्सा की बात गयी है, जल को औषधि कहा गया है। सौर चिकित्सा में सूर्य की किरणों द्वारा की जाने वाली चिकित्सा को बताया गया। वायु चिकित्सा में वायु द्वारा की जाने वाली चिकित्सा बताया गया। ऋग्वेद में सूर्य चिकित्सा के माध्यम अलग-अलग रोगों को हटाने तथा सूर्य की किरणों द्वारा हृदय संबंधी बीमारियों को ठीक करने का उल्लेख है। पानी और जड़ी-बूटियों को दवा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। ऋग्वेद में प्राकृतिक चिकित्सा के साथ-साथ स्पर्श चिकित्सा और त्वचा के देखभाल का वर्णन भी प्राप्त होता है। ऋग्वेद में वर्णित विविध चिकित्सा पद्धतियों और उसकी कार्यप्रणाली ही वह आधार शिला थी जिस पर आयुर्वेद - (जीवन के विज्ञान) की अत्यंत सुव्यवस्थित चिकित्सा प्रणाली की इमारत का निर्माण हुआ, चारों वेदों में मुख्य रूप से, चिकित्सा विषयों पर अथर्ववेद में सबसे ज्यादा चर्चा की गई है। इसके विपरीत ऋग्वेद में चिकित्सा की मात्रा कम है इसके और अधिक अध्ययन तथा आलोचनात्मक प्रशंसा की आवश्यकता है। वैदिक चिकित्सा के अध्ययन ने दुनिया भर के विद्वानों को आकर्षित किया है।

[23] अथर्ववेद - 06/13/06, केएल जोशी (सं.), अथर्ववेद संहिता -खंड। मैं, दिल्ली, परिमल प्रकाशन, 2015, पृ. 280.

© 2023 Published by Shodh Sagar. This is a Gold Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

ISSN: 2348-5612 | Vol. 10 | Issue 4 | Oct - Dec 2023 | Peer Reviewed & Refereed

सन्दर्भ-ग्रंथ-सूची -

1. के.एल. जोशी (सं.), ऋग्वेद संहिता - खंड। आई आई वी, दिल्ली, परिमल प्रकाशन, 2016
2. के. डी. द्विवेदी और बी. द्विवेदी, वेदों में आयुर्वेद (वेदों में चिकित्सा विज्ञान), ज्ञानपुर, विश्वभारती अनुसंधान **परिषद** , 2018
3. ऋग्वेद-संहिता, अनुवाद। रमेश चंद्र दत्ता, कोलकाता, श्री बलराम प्रकाशन, 2007
4. निमय चंद्र पाल (सं.), ऋग्वेद संहिता, अनुवाद। रमेश चंद्र दत्ता, स्वदेश प्रकाशन, 2007
5. आचार्य वेदांत तीर्थ (सं.), ऋग्वेद-खंड। 4, दिल्ली, मनोज प्रकाशन, 2012
6. आचार्य वेदांत तीर्थ (सं.), ऋग्वेद-खंड। 1, दिल्ली, मनोज प्रकाशन, 2012
7. श्री बालादेव उपाध्याय और श्रीनिवास रथ (संस्करण) संस्कृत -वांमय का बृहद इतिहास , लखनऊ , उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, 2006
8. ज़िस्क के.जी. वेद में चिकित्सा दिल्ली: मोतीलाला बनारसीदास प्रकाशक; 2009
9. मुखोपाध्याय बी. एन. भारतीय चिकित्सा का इतिहास, नई दिल्ली: मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड; 2007
10. WisdomLib.org

© 2023 Published by Shodh Sagar. This is a Gold Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com